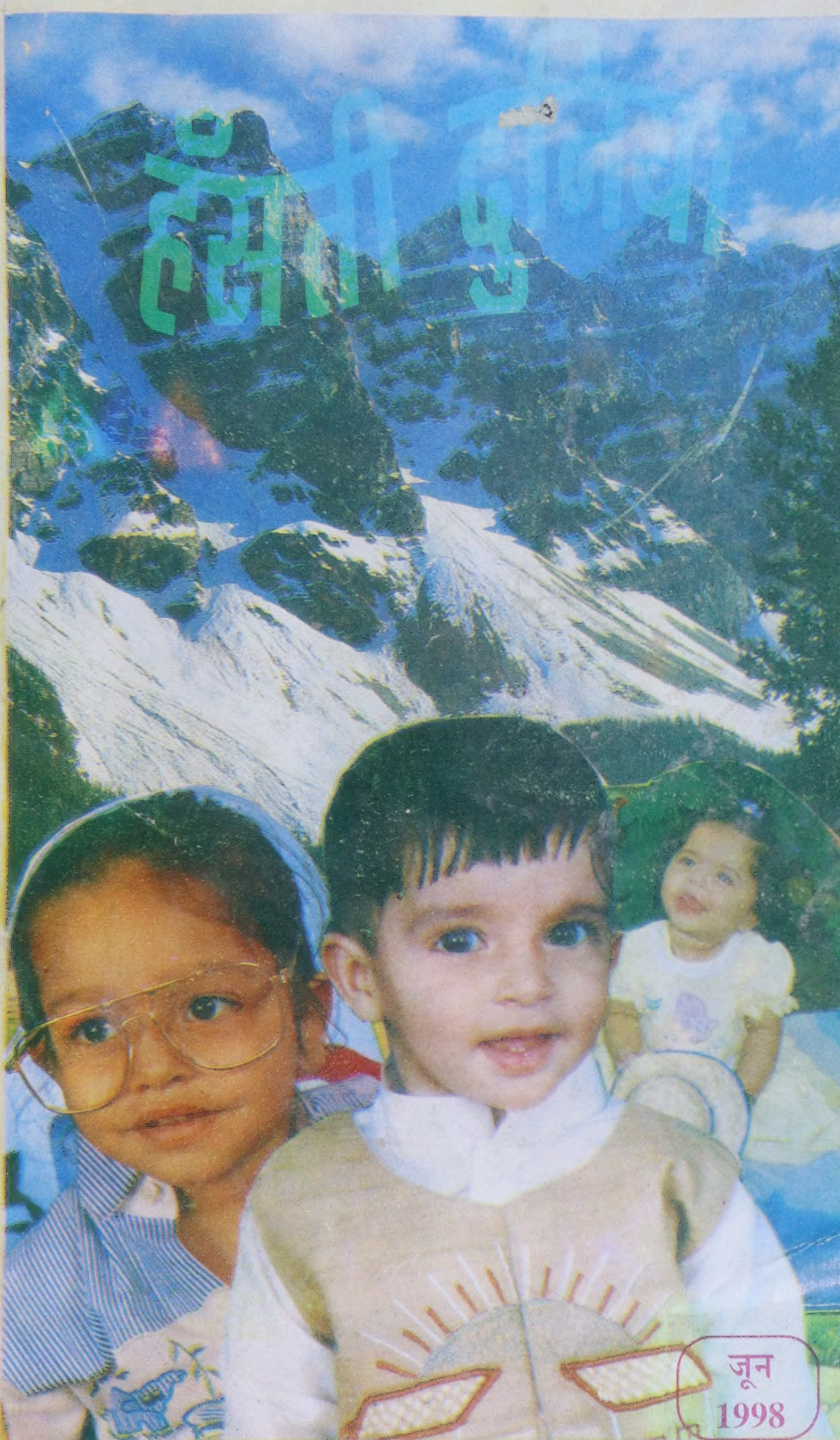

हँसती दुनिया
जून
1998


WEDDING SAREES, SUIT-DUPATTA & LENGHA CHUNNI FOR ALL OCCASIONS
CSE
CHHABRA®
Saree Emporium
MANUFACTURERS & WHOLESALE
DEALERS OF HIGH FASHION SAREES
488-489 KATRA ASHRAFI, CHANDNI CHOWK,
DELHI-110006
PHONES : SHOP : 3262011, 3273971
RESI. : 6413052 FACTORY : 89-20305
SISTER CONCERN
CHHABRA SAREE MANDIR®
FACTORY :
AMRRITA TEXTILE INDUSTRIES, NOIDA
WE HAVE NO OTHER BRANCH IN DELHI
BEWARE OF SIMILAR NAMES & BROKERS.

वर्ष 25
अंक 6

हँसती दुनिया

(बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका)

जून
1998

कहानियां

तोता	अशोक कुमार भट्ट	3
समझदार बन्दर	कदीर जावेद 'प्रेमी'	12
जूते का तल्ला	ईलू रानी	14
अनोखा चोर	डॉ. विद्या श्रीवास्तव	25
विचित्र न्याय	कमला गर्ग	29
धन के चक्कर में	ईलू रानी	34
अहंकार का दान	राम अरोड़ा	51
आयुष	नरेन्द्र सिंधवी	55

कविताएं

गर्मी का मौसम	राम अरोड़ा	10
गर्मी	हरि सिंह 'हरीश'	11
शिम्पू चूहा	किशोर निरंकारी	15
बाल कविता	दिलीप भाटिया	23
सूरज चंदा तारे	कु. अंशु शुक्ला	49
पहलवान चूहा	राम सागर 'सदन'	50
धूल की अभिलाषा	बालकवि हंस	59

लेख

तेज धूप में चलना खतरनाक	कमल सौगानी	20
शतरंज जगत का नन्हा बादशाह....	विजय भटनागर	21

स्तम्भ

सबसे पहले	2
कभी न भूलो	17
दादा के उत्तर	18
डॉ. अंकल के उत्तर	41
समाचार	42
पढ़ो और हँसो	44
रंग भरो परिणाम	46
आपके पत्र मिले	64

चित्रकथाएं

पूसी	36
मास्टर जी	60

प्रकाशक एवं मुद्रक श्री निर्मल जोशी ने सन्त निरंकारी मण्डल, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली-9 के लिये, हरदेव प्रिण्टर्ज निरंकारी कालोनी, दिल्ली-9 में मुद्रित करवाया।

कार्यालय फोन : 7430181

सम्पादक (अवैतनिक) **विनय जोशी**

सहायक सम्पादक **विमलेश आहूजा**

कला निर्देशक **दीपक बग्गा**

वार्षिक चन्दा : 30/- रु. **इंग्लेण्ड £ 7, अमेरिका $ 12** **कनाडा $ 15**

जीवन-पर्यन्त : 300/- रु. **इंग्लेण्ड £ 100, अमेरिका $ 150** **$ 200**

एक प्रति : 4/- रु

सबसे पहले

एक युवक था स्नेही। आदत गन्दी थी। बिना गालियों के बात नहीं करता था। किसी ने उसका कहा नहीं माना तो समझो उसकी शामत आ गई। सभी लोग उससे परेशान थे।

एक बार एक साधू महात्मा उसे मिले। उन्होंने उसे आशीर्वाद दिया। उसे सत्य का पता चला। वास्तविक ज्ञान ने उसके जीवन को ही बदल कर रख दिया। उसकी जुबान पर से गालियाँ समाप्त हो गई। व्यवहार सरस हो गया। अब वह सभी से सद्व्यवहार करने लगा। स्वयं को 'दास' नाम से सम्बोधित करने लगा।

एक बार उसके उसी सद्व्यवहार को उनकी हीनता और कमजोरी समझ कर एक व्यक्ति ने उससे दुर्व्यवहार किया। थोड़ी देर सह लेने के बाद भी जब स्नेही ने देखा कि दुर्भाषी मान ही नहीं रहा तो उसने उसे एक धक्का देकर गिरा दिया। दुर्भाषी बोला—तू अच्छा भगत है। तूने तो मुझे धक्का देकर गिरा ही दिया।

स्नेही ने फिर प्यार से कहा—भइया, मुझ में भगवान की शक्ति आ गई है। यह मुझे समझा भी रही है कि दिमाग खुला रखो। भगवान पर विश्वास रखें तो तुम्हारे सद्व्यवहार को कोई कमजोरी नहीं समझेगा। भगवान तो सभी जगह रहता है इसीलिये सदा अच्छा कार्य करते रहने की प्रेरणा भी मिलती रहती है। अच्छा क्या है इसका पता इसी बात से चलता है कि जिस कार्य से स्वयं को खुशी मिले व दूसरे को भी प्रसन्नता मिले। वही सद्कार्य है। कमजोरी, क्रोध या वासना में फसने वाले कार्य सद् नहीं होते। इसलिये शुभ कार्यों को जानकर उन्हें दृढ़ता से जीयें।

छुट्टियों में प्रभु-प्रदत्त प्रभुमयी गुणों का विकास करो व सदा सफलता को प्राप्त करो।

❑ **विनय जोशी**

तोता



धीरू अपना खाना-पीना भूल सकता था लेकिन अपने घर की छत पर सुबह-शाम पक्षियों को दाना चुगाना कभी नहीं भूलता था।

माँ आवाज़ देती रहती—अरे धीरे, अब नीचे आ। खाना खा ले। इन पक्षियों को दाना चुगाता रहेगा। पता नहीं कहाँ से यह पक्षी-प्रेम पाया है। लगता है कहीं पूर्व जन्म का कोई नाता है तेरा इन पक्षियों से।



माँ बुदबुदाती रहती पर बेटे पर कोई असर नहीं। वह तो एकाग्र मन से अपने पक्षी दोस्तों को दाना चुगाता रहता।

माँ के बार-बार पुकारने पर भी जब धीरू छत से नीचे उतर कर नहीं आता तब उसकी माँ तनिक गुस्सा कर कहती—अच्छा तो ठीक है तू नहीं आ रहा तो ले मैं ही

आ रही हूँ डंडा लेकर । आज तेरे सारे पक्षियों को ऐसा दाना चुगाऊँगी कि फिर कभी इस छत पर नहीं आएंगे।

तब धीरू तीव्रतापूर्वक कहता—अरी माँ, बस तू मत आ। तू थक जायेगी। पहले ही बीमार है।

माँ कहती—तो फिर जल्दी आ।

धीरू नीचे उतर कर आ गया परन्तु माँ का बुदबुदाना जारी रहा। वह कहती रहती—पता नहीं क्यों इन पक्षियों के पीछे पागल हुआ रहता है। दाना ये चुगाए



और इन पक्षियों की बीट छत पर जाकर मैं साफ करूँ। सारी छत पर बीट ही बीट। पता नहीं ये पक्षी इसे क्या देते हैं?

धीरू माँ को समझाते हुए कहता, अरी माँ, तू क्यों परेशान है। ये बेचारे पक्षी दो-चार दाने चुग लेते हैं तो इसमें तेरा क्या चला जाता है। तुझे पता नहीं ये पक्षी हमारा कितना काम करते हैं।

माँ खिन्न होकर कहती, हाँ, हाँ, सारे बर्तन साफ करते हैं। साग-सब्जी लाते हैं। घर का चौका-चूल्हा करते हैं।

धीरू तपाक् से उत्तर देता—अरी माँ, ये सब काम तो आदमी करते हैं।

पक्षी तो ठहरे आजाद जीव। पर प्रकृति ने इनको जो काम करने को दे रखे हैं वे सब काम आदमी से ज्यादा निष्ठा पूर्वक करते हैं।

माँ कहती—हाँ, हाँ, मुझे मत पढ़ा।

धीरू पुनः कहता—माँ मैं सच कह रहा हूँ। इस जीव जगत में सब अपने कर्म का दाना खाते हैं। हराम का कोई नहीं खाता।

माँ थक हारकर कहती—ले तू बन गया ज्ञानी। तुझ से जीतना मुझ जैसी मूर्ख की बस की बात नहीं । अब ज्यादा बातें मत बना। खाना खा ले।

माँ और बेटे के बीच इस प्रकार की नोक-झोंक दिन-प्रतिदिन चलती रहती थी।

माँ मन ही मन उन निर्दोष पक्षियों को अपने धीरू के लिए अच्छे दोस्त मानती थी। वह कई बार मन ही मन में पक्षियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहती—इन बेचारे पक्षियों के बहाने धीरू कुसंगत से भी बचा रहता है आजकल के बच्चे तो शैतान से कम नहीं। इनकी संगत में अच्छी बातें सीखना सम्भव नहीं। जब धीरू घर नहीं होता तो उसकी माँ नित रोज पक्षियों को दाना चुगाती। उनके लिए मिट्टी के बर्तन में पानी रखती। माँ को भी एक अभूतपूर्व आनन्द मिलता पक्षियों को दाना चुगाने में। वह आनन्द विभोर हुई पक्षियों को



दाना चुगते हुए टकटकी लगाए देखती रहती और फिर एक दार्शनिक की भाँति सोचने लगती, कितने स्वतन्त्र, चिन्ता मुक्त हैं ये सब। न ईर्ष्या-द्वेष, न लोभ न लालच है इनमें। न अन्याय करने की प्रवृति, न किसी का शोषण करने का विचार। सबके सब अपना-अपना दाना-पानी अपनी जरूरत का ले रहे हैं। न वर्तमान का संताप, न भविष्य की चिन्ता। आहा, ये पक्षी कितने ऊँचे जीव हैं। उड़ते हैं तो ऊँचा ही उड़ते हैं।

सोचते-सोचते धीरू की माँ का वक्त गुजर जाता और उसे पता भी नहीं चलता कि कब धीरू उसके पीछे आकर खड़ा हो गया।

जब धीरू चुपके से अपनी माँ के कन्धे पर अपना मुलायम हाथ रखता तो तब जाकर उसकी माँ की दार्शनिक विचार निद्रा टूटती और वह हड़बड़ाकर कहती—अरे तू आ गया। माँ कहती थोड़ी अकेली था। सोचा छत पर आकर बैठ जाऊँ। पर यहाँ तो तेरे ये शैतान पक्षी दोस्त अपनी गुटरगूँ कर रहे थे। मैं इनकी ये गुटरगूँ सुनने बैठ गई । देख तो, इन्होंने छत का क्या हाल कर रखा है?

धीरू कहता—अरी माँ, क्यों झूठ बोल रही है। ये क्यों नहीं कहती कि तू भी मेरे इन दोस्तों को प्यार करती हो अन्यथा तू क्यों इन्हें दाना डालती?

माँ कहती—चल, फिर क्या हुआ? अगर इनको दाना-पानी दे दिया तो आखिर ये तेरे दोस्त हैं।

धीरू कहता ये हुई ना बात। यदि मेरी माँ मेरे पक्षी दोस्तों का ध्यान नहीं करेगी तो और कौन करेगा?

सर्दी का मौसम था। कड़ाके की ठंड पड़ रही थी। आज कई दिन बाद धूप निकली थी। सर्दी की नरम-गरम धूप का सभी आनन्द ले रहे थे। पशु-पक्षी भी। नित रोज की भाँति धीरू भी छत पर पक्षियों को दाना चुगाने गया। आज अपेक्षाकृत ज्यादा पक्षी आए हुए थे। इनमें से कुछ चिरपरिचित थे तो कुछ अजनबी पक्षी थे। इन अजनबी पक्षियों में से एक था तोता। वह तोता गहरे हरे रंग का था। उसके पाँव काले थे। उसकी चोंच गहरे लाल रंग की थी। उसका सिर भी लाल

रंग का था। कुल मिलाकर वह देखने में अतिसुन्दर था। धीरू को लग रहा था कि वह तोता किसी बाहर देश से आया है। सर्दी के मौसम में प्रायः पक्षी पश्चिमी देशों से एशियाई देशों में आ जाते हैं। क्योंकि यहाँ अपेक्षाकृत ठंड कम पड़ती है।

इस तोते को देखकर धीरू बहुत खुश था। क्योंकि ऐसा तो दुर्लभ होता है। तोता भी शायद खुश था क्योंकि यहाँ उसे वह सब कुछ मिल गया था जिसकी तलाश में वह यहाँ आया था।

देखते ही देखते धीरू और तोते में घनिष्ठता हो गई। तोता दिन में दाना पानी लेता और फिर आकाश में उड़ान भरता। इधर-उधर घूमकर फिर आ जाता।

एक दिन धीरू ने सोचा कि सर्दी खत्म होने पर यह तोता फिर अपने देश को लौट जायेगा । पता नहीं फिर आयेगा या नहीं। क्यों न इसे पकड़ लिया जाए और अपने घर में एक पिंजरे में रख लिया जाए।

बस, धीरू ने इस तोते को एक दिन पकड़ लिया और एक पिंजरे में बंद कर दिया। धीरू इस तोते का विशेष ध्यान रखता। उसे हरी मिर्च, ताजा चने की दाल, फल इत्यादि देता। तोता बेचारा थोड़ा बहुत खाता। शेष सब कुछ पिंजरे में पड़ा रहता। तोता मौन रहता। धीरू उसे पढ़ाने की कोशिश करता परन्तु तोता अपने पंख फड़फड़ाकर प्रतिरोध प्रकट करता।

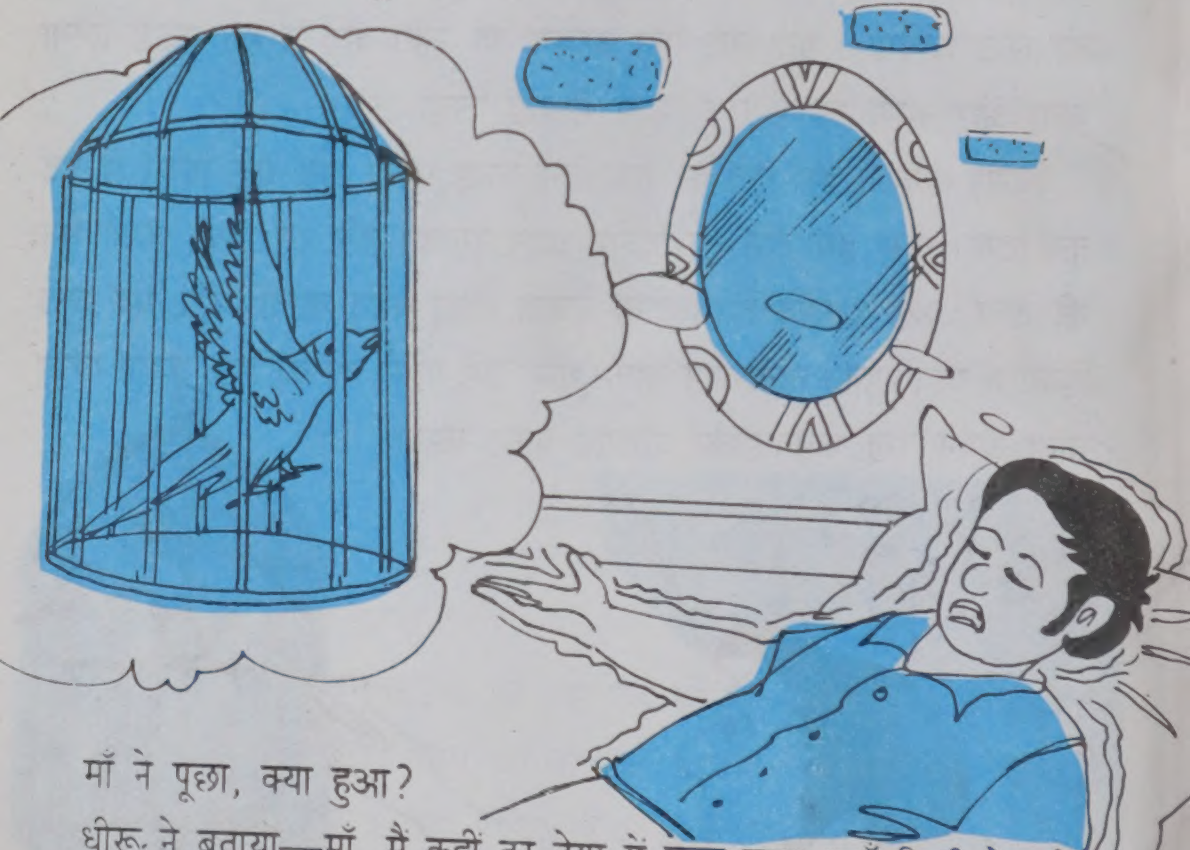


उस तोते में अन्य पक्षियों जैसी चंचलता न रह गई थी। ऐसा लगता था मानो वह उदास हो। धीरू की समझ में कुछ नहीं आ रहा था।

मार्च का महीना था। सर्दी कम हो चुकी थी । अजनबी पक्षियों का छत पर आना बन्द हो चुका था। शायद सर्दी कम होने के कारण वे अपने-अपने मुल्क को लौट चुके थे।

एक दिन धीरू गहरी नींद में सोया हुआ था। अचानक नींद में वह बड़बड़ाने लगा—मुझे बन्दी मत बनाओ। मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? मुझे अपने घर जाने दो। वह बार-बार यही वाक्य बड़बड़ाए जा रहा था।

धीरू की माँ उठी। उसने धीरू को जगाया। वह डर के मारे काँप रहा था। उसके बदन से पसीना छूट रहा था।



माँ ने पूछा, क्या हुआ?

धीरू ने बताया—माँ, मैं कहीं दूर देश में चला गया। वहाँ किसी ने मुझे बंदी बना लिया, मैं डर गया।

सुबह हो गई। धीरू के मन में एक बंदी बन जाने की पीड़ा व डर अभी भी था। वह घबराया हुआ कुछ उदास सा था।

उसकी निगाह पिंजरे में बंदी तोते पर पड़ी। उसकी आँखें सजल हो गई। धीरू एक बंदी की पीड़ा का अनुभव स्वप्न में ले चुका था। वह पिंजरे की ओर बढ़ा। उसने पिंजरा खोला।

उसने कहा—मेरे दोस्त! मुझे माफ करना। मैंने तुम्हें बंदी बनाया। किसी को बंदी बनाना पाप है, मुक्त करना पुण्य। लो, जाओ। अपने देश लौट जाओ। मेरे घर की छत पर अगले वर्ष सर्दी में फिर आना । मैं तुम्हें बंदी नहीं बनाऊँगा। मेरी दोस्ती का पैगाम अपने देश ले जाओ । मुझे भूलना मत। मैं तुम्हारी इन्तजार करूँगा। जाओ, अब तुम अपने देश लौट जाओ। फिर आना, फिर मिलेंगे।



धीरू का दोस्त तोता खुश हुआ। वह पिंजरे से बाहर निकल कर धीरू के कंधे पर बैठ गया।

धीरू की आँखें भर आई। धीरू ने कहा— उड़ जाओ, फिर आना। इतना सुनते ही तोता उड़ गया।

देखते ही देखते तोता धीरू की आँखों से ओझल हो गया।

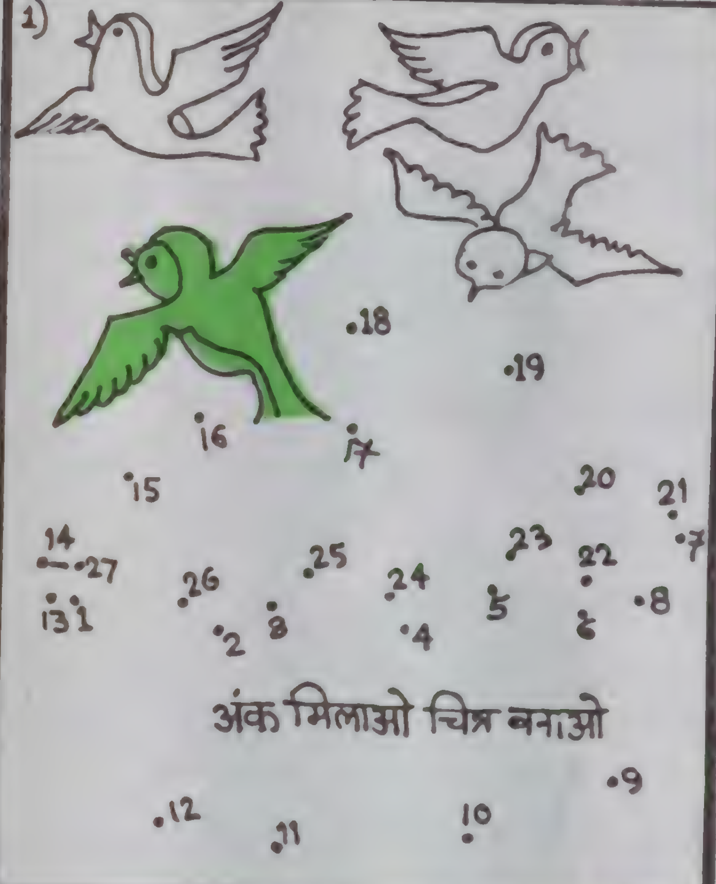
धीरू की निगाहें क्षितिज पर जमी हुई थीं। इस आशा में कि वह तोता फिर लौट कर आयेगा।

खेल का समय

-किशोर डैनियल



1)



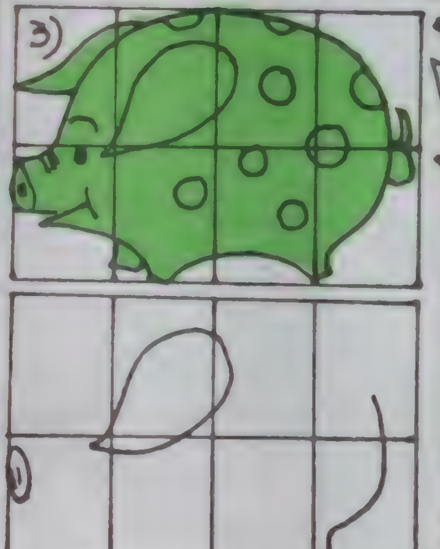
अंक मिलाओ चित्र बनाओ

2)



आसान चित्र बनाओ।

3)



ग्राफ की सहायता से चित्र बनाओ

4)



इस चित्र में रंग भर कर देखो

अनोखा चोर

पात्र परिचय :

दीनानाथ	:	सेठ जी उम्र 45 वर्ष
गोमती	:	सेठानी उम्र 40 वर्ष
अन्य पात्र	:	तीन चोर : 1. कलुआ, 2. बुधुआ, 3. घन्सू ।

(प्रथम दृश्य)

(समय रात्रि के दो बजे । कभी-कभी कुत्तों के भोंकने की आवाजें सुनायी देती हैं । तीन चोर सेठ दीनानाथ के घर चोरी करने घुसते हैं । सेठ जी व उनकी पत्नी दोनों एक कमरे में सो रहे हैं । सेठ जी के खर्राटों की आवाजों से वातावरण गूंज रहा है ।)

पहला चोर : (अपने साथियों से) यार! सेठ के खर्राटों ने मेरे नाक में दम कर दिया है । इसकी नाक तो ऐसे बोल रही है जैसे कोई भैंसा सो रहा है । मेरे तो सर में दर्द होने लगा ।

दूसरा चोर : तू भी कितना मूर्ख है। इतना भी नहीं समझता कि इसके खर्राटों की वजह से हम लोग बड़े आराम से चोरी कर सकते हैं ।

तीसरा चोर : हाँ, ये बात तो ठीक कहते हो ।

गोमती : (सेठ जी को जगाते हुए) क्यों जी! उठो तो..

(गोमती के जगाने पर सेठ जी नहीं उठते, वे उसी प्रकार खर्राटे लेते रहते हैं)



गोमती : (सेठ जी को जगाते हुए) सुनो जी! लगता है अपने घर में चोर घुस आए हैं।

दीनानाथ : (जागते हुए, आश्चर्य से) क्या !

(गोमती झट से उन्हें रोकते हुए मुँह पर हाथ रखकर)

गोमती : अजी! धीरे बोलिए। कहीं वो लोग हम लोगों पर हमला न कर दें।

(घबराते हुए) मैं तो कहती हूँ जल्दी से कोई तरकीब सोचिए ताकि अपना सामान चोरी होने से बच जाए।

दीनानाथ : (कुछ सोचते हुए) देखो! मैं भी एक चोर बन जाता हूँ। तुम मुझे भी चोर समझना।



(सेठ जी जल्दी-जल्दी अपने सारे कपड़े उतार लेते है वे अंडर-वियर और बनियान पहने रह जाते हैं। सिर पर एक साफा बाँधते है जिससे उनका आधा चेहरा भी छिप जाता है।)

दीनानाथ : देखो जी! जैसे ही मौका लगे वैसे ही तुम पुलिस को फोन कर देना। मैं चोरों के बीच चोर बनकर जाता हूँ और उन्हें अपनी बातों में लगा लेता हूँ। (सेठ जी एक तौलिए में अपना कुछ सामान बांध लेते हैं और चोरों की तरफ बढ़ लेते हैं।

(द्वितीय दृश्य)

कलुआ : यार! चोरी करने तो हम तीन लोग आए थे, ये चौथा चोर कहाँ से आ गया?

बुधुआ : (आश्चर्य से) हाँ...अभी तक तो हम तीन ही थे फिर ये।

दीनानाथ : अरे भइया! तुम लोग परेशान मत हो। मै भी चोरी करने ही घुसा था। पोटली दिखाते हुए, देखो-देखो मैंने कितना कीमती सामान उठाया है। दरअसल मुझे जोरों की भूख लगी थी। मैं चौके में गया तो मैंने जी भर के खाया, फिर पानी पिया। थोड़ा आराम करने के लिए लेटा तो नींद आ गई। अपने ही खर्राटे से नींद खुली तो उठ बैठा।

कलुआ : तो क्या तुम्हीं खर्राटे ले रहे थे?

दीनानाथ : और क्या! मालिक तो आज शहर से बाहर गए हैं, मालकिन को मैंने बेहोशी की दवा सुंघा दी है वो तो सो रही है।

बुधुआ : (गुस्से में सेठ जी की गर्दन पकड़ लेता है) सच-सच बता तू कौन है ?

दीनानाथ : (घबराने का नाटक करते हुए) मै...मै। सेठ जी का नया नौकर हूँ। दो महीने पहले ही मुझे उन्होंने नौकरी पर रखा है। तुम्हें यह सब सामान चाहिए तो ले लो पर मुझे छोड़ दो। मै कोई और घर देख लेता हूँ।

(सेठ जी ज्यों ही जाने के लिए मुड़ते है त्यों ही सामने पुलिस खड़ी नजर आती है)



गोमती : दरोगा जी, पकड़ लीजिए । इन चोरों को । ये लोग मेरे घर में चोरी करने घुसे थे ।

(दीनानाथ को भी दरोगा जी पकड़ने लगते हैं ।)

दीनानाथ : (रोकते हुए) अरे...अरे...दरोगा जी, आप मुझे हथकड़ियाँ मत पहनाइए ।

गोमती : (हँसते हुए) हाँ...हाँ दरोगा जी, ये तो मेरे पति सेठ दीनानाथ जी हैं । इन्होंने ही तो चोर बनने का नाटक किया है । चोरों के बीच जाकर ये भी चोर का नाटक कर रहे थे । मौका देखकर मैंने आपको फोन कर दिया था ।



दीनानाथ : (गर्व से) देखा! आज मेरी अकल कैसी काम आयी ।

गोमती : हाँ...हाँ मैं तो तुम्हें कुछ-कुछ समझ रही थी ।

दीनानाथ : (हँसते हुए) हाँ..हाँ कह दो मूर्ख समझती थीं । पर देख लिया ना मेरी सूझ-बूझ के कारण ही आज घर में चोरी होने से बच गई।

गोमती : पर मैंने तो आज अपनी 30 साल की नौकरी में इस तरह का अनोखा चोर पहली बार देखा है ।

(सेठ दीनानाथ और सेठानी गोमती भी हँसते हैं)

(दरोगा जी तीनों चोरों को पकड़कर ले जाते हैं ।)

विचित्र न्याय

बहुत पहले की बात है। एक गांव में दो भाई रहते थे। एक अमीर था और दूसरा गरीब। दोनों अलग-अलग रहते थे। एक दिन गरीब के घर का जलावन समाप्त हो गया। उसने जंगल जाकर कुछ लकड़ी काटी, लेकिन उसे लादकर घर लाने के लिए उसके पास घोड़ा नहीं था। उसने सोचा—मैं अपने भाई के पास जाकर उससे घोड़ा मांग लाता हूँ।

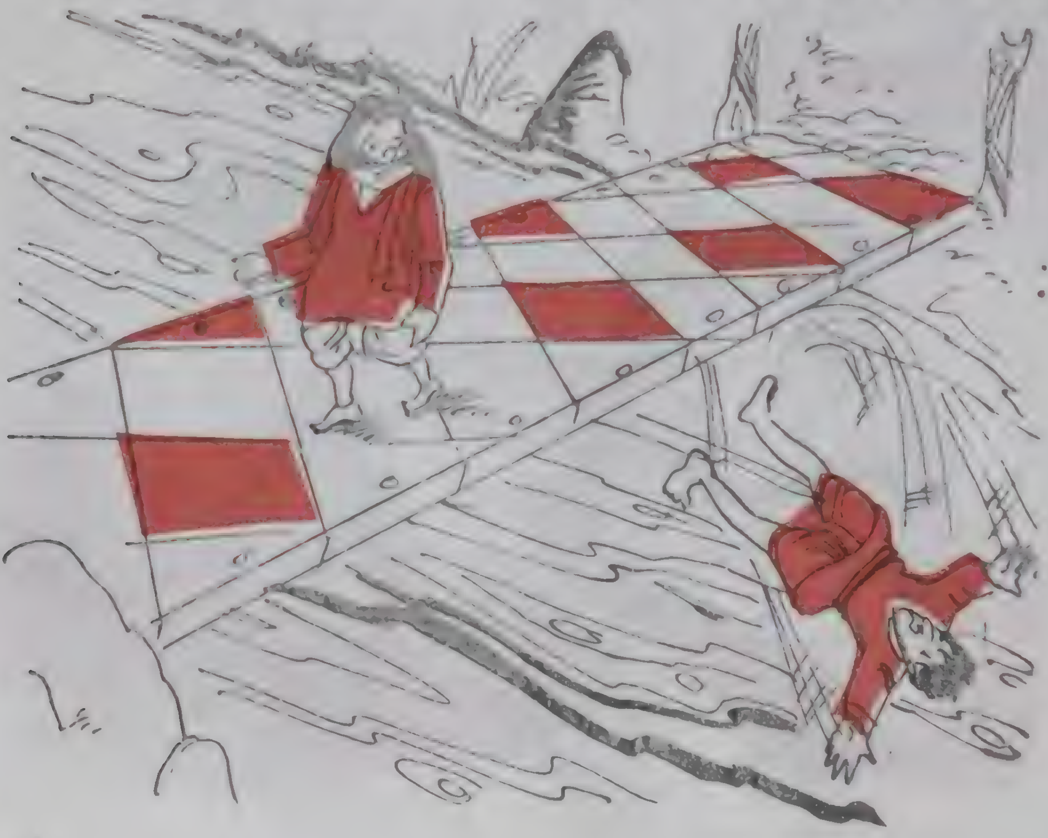
वह अपने भाई के पास गया और घोड़ा मांगा। अमीर भाई ने बड़ी रुखाई से जवाब दिया—खैर, इस बार तो घोड़ा ले जा सकते हो, लेकिन दुबारा कभी मांगने की कोशिश मत करना। तुम आज एक चीज मांग रहे हो तो कल दूसरी मांगोगे। अगर यही सिलसिला जारी रहा तो मैं शीघ्र ही सड़कों पर भीख मांगता नज़र आऊँगा।



गरीब भाई जब घोड़ा लेकर जंगल आया तो याद आया कि वह घोड़े का साज तो मांगना भूल ही गया। अब फिर से भाई के पास जाने की कोई तुक नही थी। वह साज तो देगा ही नहीं। ऐसा सोचकर उसने लकड़ी से लदे 'स्लेज' (बर्फ पर घिसटती हुई चलने वाली एक तरह की गाड़ी) को घोड़े की दुम के साथ खूब कसकर बांध दिया और उसे घर की ओर हांक दिया। रास्ते में 'स्लेज' एक ठूंठ में अटक गयी। गरीब भाई का इस ओर ध्यान ही नहीं गया और उसने घोड़े को चाबुक मार दिया। घोड़ा बहुत तेज था। चाबुक लगते ही वह तेजी से भागा। लेकिन ठूंठ में 'स्लेज' के फंसे रहने से घोड़े की दुम उखड़ गयी।

डरते-डरते वह घोड़े को अपने भाई के यहाँ लाया। अपने घोड़े की उखड़ी दुम देखकर वह आग-बबूला हो गया और अपने भाई को डांटने लगा। बदमाश, तुमने मेरे घोड़े का सत्यानाश कर दिया है। यह मत समझना कि मै तुम्हारा पिंड ऐसे ही छोड़ दूँगा।

फिर अमीर भाई ने गरीब भाई के खिलाफ मुकदमा दायर कर दिया। कुछ समय के बाद दोनों भाइयों को अदालत मे बुलाया गया। दोनो नगर की ओर



चल दिये। गरीब सोच रहा था, खुद तो कभी अदालत का मुँह नहीं देखा, मगर यह कहावत जरूर सुनी है, "सबल हमेशा निर्बल को पछाड़ता है और मुकद्दमे में गरीब अमीर से हारता है।" मुझे निश्चय ही अपराधी ठहराया जायेगा चूँकि मैं गरीब हूँ।

जब वह ऐसा सोच रहा था, उस समय दोनों भाई एक पुल को पार कर रहे थे। पुल की रेलिंग नहीं थी। इसलिए गरीब भाई का पाँव अचानक फिसला और वह नीचे जा गिरा। संयोग की बात कि इसी समय एक व्यापारी जमी हुई नदी पर से 'स्लेज' दौड़ता हुआ अपने वृद्ध पिता को डॉक्टर के पास लिये जा रहा था। गरीब आदमी सीधा 'स्लेज' में लेटे हुए बीमार बूढ़े पर जा गिरा। बूढ़े का तो उसी क्षण दम निकल गया पर गरीब भाई को जरा भी चोट नहीं आयी। व्यापारी ने गरीब को पकड़ लिया और गुस्से में उबलते हुए कहा—चलो, मेरे साथ अदालत में।

इस प्रकार वे तीनों। दोनों भाई और व्यापारी, अब एक साथ नगर की ओर चल दिये। गरीब का दिल बिल्कुल ही बैठ गया। उसने सोचा—अब तो सजा निश्चय ही मिलेगी बचने की कोई आशा नहीं।

अचानक सड़क पर उसे पड़ा एक पत्थर दिखाई दिया। उसने उसे उठाकर एक चीथड़े में लपेटकर अपने कोट के अंदर छिपा लिया और सोचा—जहाँ सत्यानास, वहाँ सवा सत्यानास। फिर अगर जज ने बेइन्साफी की और मुझे अपराधी ठहराया तो उसे भी दूसरी दुनिया में पहुँचा दूँगा।

जज के सामने गरीब के खिलाफ दो-दो मुकद्दमे थे। जज ने कार्यवाही शुरु की और पूछताछ करने लगा। गरीब जब तब जज पर नजर डालता, चिथड़े में लिपटा हुआ पत्थर निकालता और फुसफुसाता—मैं न्याय मांगने आया, पर साथ आज क्या लाया! उसने ऐसा मुकद्दमे के दौरान कई बार कहा।

जज ने यह देखा तो मन ही मन सोचा, कहीं यह देहाती मुझे सोने का टुकड़ा तो नहीं दिखा रहा? उसने एक बार फिर देखा तो उसके मन में लालच आ गया, अगर यह चाँदी भी हो तो अच्छी खासी बड़ी रकम मेरे हाथ लग जायेगी।



ऐसा सोचकर उसने गरीब के पक्ष में फैसला सुनाया कि दुम के फिर से उग आने तक दुम कटा घोड़ा गरीब भाई के पास ही रहे। फिर व्यापारी से उसने कहा—रही यह बात कि इसने तुम्हारे पिता को मार डाला है, तो यह भी उसी पुल के नीचे बर्फ पर खड़ा हो जाये और तुम्हें पुल पर से उसी तरह छलांग लगाकर इसकी हत्या करनी होगी और फिर मुकद्दमा समाप्त हो गया।

अमीर भाई अब फेर में पड़ गया। उसने गरीब भाई से कहा—चलो ऐसे ही सही, तुम मुझे दुम कटा घोड़ा ही दे दो।

अरे नहीं भाई, गरीब ने जवाब दिया, जज ने जो फैसला किया है, वही ठीक है। फिर से दुम उगने तक मैं तुम्हारे घोड़े को अपने पास ही रखूँगा। अंत में अमीर भाई के कहने पर वह तीस मार्क पर घोड़ा देने को तैयार हो गया।

अब व्यापारी ने भी गरीब से कहा—सुनो भाई, मैं तुम्हारी गलती माफ करता हूँ। मेरा बाप तो अब किसी तरह से भी वापस नहीं आयेगा। मुझे छोड़ दो।

नहीं, नहीं, अब तो तुम्हें मेरे साथ पुल पर चलना ही होगा। जज के फैसले के अनुसार तुम्हें पुल से मुझ पर कूदना ही होगा।

व्यापारी घबरा गया और गिड़गिड़ाते हुए बोला—अरे भाई, छोड़ो उन बातों को। आओ दोस्ती कर लें। मैं तुम्हें एक सौ मार्क देने को तैयार हूँ।

गरीब आदमी व्यापारी से एक सौ मार्क लेकर जाने ही वाला था कि जज ने उसे बुलाकर कहा—अब लाओ, वह जिसका तुमने वादा किया था।

गरीब ने कोट के नीचे से पोटली निकाली, चिथड़ा हटाया और जज को वह पत्थर दिया, मैंने आपको यही दिखाते हुए यह कहा था—मैं न्याय मांगने

आया, पर साथ आज क्या लाया! अगर आप कोई दूसरा फैसला करते तो मैंने इस पत्थर से आपकी जान ले ली होती।

शुक्र है कि मैंने इस देहाती के हक में ही फैसला कर दिया। अन्यथा मैं अब जिन्दा न होता। जज ने सोचा, गरीब तब खुशी-खुशी अपने पक्ष में न्याय पाकर घर लौट आया। ●



क्या आप जानते हैं?

❑ संग्रहकर्ता: **अजेश 'बिट्टु'** (गिदड़बाहा), **रेनू रावतानी** (बुरहारनपुर)

1. भारत में सबसे पहले टी.वी. सैंटर दिल्ली में शुरू हुआ।
2. भारत की प्रथम महिला आई.पी.ऐस. (पुलिस) श्रीमती किरण बेदी हैं।
3. भारत की प्रथम महिला पायलट हरपरीत आहलुवालिया हैं।
4. भारत में सबसे लम्बी सड़क 'ग्रांड ट्रंक' रोड है।
5. भारत में सबसे ऊँचाई वाला डैम भाखड़ा नांगल डैम है।
6. भारत में सबसे लम्बी झील वूलर लेक जम्मू-कश्मीर में है।
7. सूर्य की किरण पृथ्वी पर लगभग 500 सेकैंड में पहुँचती है।
8. संसार का सबसे खतरनाक जानवर समुद्री वास्प है।
9. विश्व में नेपाल एक ऐसा देश है जो कभी गुलाम नहीं हुआ।
10. एस्बेस्ट विश्व में ऐसा पदार्थ है जो आग में नहीं जलता।
11. दुनिया में सबसे तेज उड़ने वाली चिड़ीया फ्रिगेट है। यह प्रतिघंटा 480 कि.मी. उड़ती है।
12. सारे जंगली जानवरों में शेर सबसे छोटे आकार वाले दिल का मालिक होता है।
13. सापों के जहर को 'वेनम' कहते हैं।
14. 16.11.91 एक ऐसी तिथि है जिसे उलटा करके लिखने पर भी दिनांक माह एवं सन में कोई अन्तर नहीं पड़ता।

कहानी : ईलू रानी

धन के चक्कर में

बहुत समय पहले की बात है। चीन के एक गाँव में अक्सर बाढ़ आ जाया करती थी। इस कारण वहाँ के निवासी वहाँ से दूर चले गये थे। वे सिर्फ दिन में आकर वहाँ खेती किया करते।

एक बार उस गाँव मे भयंकर बाढ़ आई। आठ-दस गाँव वासियों ने प्रचण्ड लहरों का मुकाबला करते हुए एक छोटी सी नाव से नदी पार करने का निश्चय किया। मझधार में पहुँचकर नाव टूट गई। सब लोग लहरों से जूझते हुए तट की ओर तैरने लगे। उनमें से एक आदमी की तैरने की रफ्तार बहुत धीमी थी। उसे धीमी गति से तैरते हुए देखकर बाकी के लोगों ने पूछा—तुम तो हम सबसे अच्छे तैराक हो, आज पीछे क्यों रह गए हो?

वह बोला—मेरे कमर बन्द में दो हजार सोने के सिक्के है। उनके भार के कारण मैं पीछे रह गया हूँ।





यह सुनकर गांव वालों ने तुरन्त उचित सलाह दी—उन्हें शीघ्र फैंक दो

लेकिन सिक्कों के लालच में उसने ऐसा करने से साफ इंकार कर दिया। जैसे-तैसे बाकी साथी किनारे पहुँच गए परन्तु वह नदी में डूबने लगा। सब लोग चिल्ला पड़े—इन सिक्कों को फैंक दो। जब तुम्हारे प्राण ही नहीं रहेंगे तो इन पैसों का क्या फायदा होगा?

वह फिर भी न माना। वह धन को प्राणों से भी अधिक प्यार करता था। अन्त में वह आदमी नदी में डूब कर मर गया। ●



पूसी
चित्र: के.पी. स्टूडियो
कहानी: अंकुर जोशी
बैठ-छुट्टियों का मजा लेंगे तुम देखना स्पीड----
पूसी ये लो हैलमैट - जरूरी है।
इसे-यहाँ टांग दो आज सिपाही नहीं मिलेगा


पुसी धीरे----
आराम से बैठो -
नो प्रोबलम
पुसी लाल बत्ती-
हो गई अब तो रुको।
बोलो मत।
बन्दर सिपाही बेचारा सीटियाँ ही बजाता रह गया।


पर दूसरा सिपाही पुसी के पीछे उसे पकड़ने भागा।
उधर दूसरे चौराहे पर - लाल बत्ती पर पुसी ने फिर - नहीं रोकी - बाईं ओर से आती हुई एक ओर - मोटर साईकिल उससे आ टकराई।
धड़ाक
पुसी दोनों धड़ाम से गिरे। टाइगर हैलमेट पहने था उसे चोट नहीं आई पुसी सड़क की चोट से बेहोश हो गई।


बन्दर (पुलिस) व टाईगर (कुत्ते) ने पूसी को अस्पताल पहुँचाया।


होश आने पर पूसी ने देखा उधर टाइगर कुत्ता व इधर बन्दर सिपाही खड़े हैं।
पूसी स्वंय ही शर्मिन्दा होकर बोली- मुझे माफ करना मैंने नियम तोड़े हैं। मुझे सजा तो मिलनी ही चाहिए थी। मैं आपसे वादा करती हूँ-फिर कभी नियम नहीं तोड़ूंगी।

डॉ. अंकल के उत्तर

□ डॉ. कुन्दन कुमार

— राजकुमारी तोलानी (गोंदिया)

प्रश्न : डॉ. अंकल मेरे बेटे के शरीर में दस साल की उम्र से बांहों और टांगों में सफेद दाग़ या छोटे फोड़े-फुंसीयाँ निकलती थी। उन पर खुजली भी होती थी। अब 24 साल का हो गया है दवाई भी बहुत कराई, लेकिन पूरी तरह खत्म नही होती। पैरों पर इसके दाग़ भी पड़ गए है। कृपया आप कोई बढ़िया सा इलाज बताएँ?

उत्तर : 200 ग्राम सरसों के तेल में 10 ग्राम गन्धक व 10 ग्राम बावची कूट पीसकर रख दें। दिन में एक बार लगायें। फिर आधा घंटा धूप में बैठें उसके बाद स्नान कर लें। कुछ ही दिनों में लाभ होगा। किशोर गुग्गुल एक गोली सुबह-शाम पानी से दें। पेट साफ रखें। तेल से तली व खट्टी वस्तुओं से परहेज रखें।

—गुरचरण सिंह (बादलगढ़: सुरजीत सिंह (कोठा गुरू का)

प्रश्न : मेरी उम्र 16 वर्ष है व हमारी छाती पर बड़ी-बड़ी गिल्टीयाँ हो गई है जो बहुत दर्द करती हैं। यह लगभग 4 साल से हैं। कृपया कोई उपाय बताएं जो इससे छुटकारा पाया जा सके?

उत्तर : 50-50 ग्राम बोरिक पाऊडर व सेंधा नमक बराबर भाग लेकर पाऊडर बनाकर रख लें। आधा चम्मच पाउडर आधा गिलास गर्म पानी में मिलाकर रूई से सेक करे। कुछ ही दिनो मे बहुत लाभ होगा।

प्रश्न : नींद नही आती। रातभर सपने आते हैं। नींद न आने से मैं सुबह 10 बजे उठता हूँ। जिससे सेहत खराब रहती है।

उत्तर : आप रात को हाथ-पाँव धेकर सोया करें व एक गिलास दूध में दो बादाम गीरी, दो काजू, आधा छुहारा व एक छोटी इलायची व मिश्री मिलाकर पीयें। लाभ होगा।

— रेशमा कुमारी (अलवर)

प्रश्न : ज्यादा चाय पीने से क्या हानि होती है?

उत्तर : पेट गैस, एसीडीटी, बदहज़मी, वातरोग इत्यादि कई प्रकार के रोग हो जाते हैं।

किसी की भी बोली बोल सकेंगे कम्प्यूटर

जापानी अनुसंधानकर्ताओं के एक दल ने एक ऐसी कम्प्यूटर प्रणाली विकसित करने में सफलता पा ली है, जो किसी भी व्यक्ति की आवाज़ में बोलने में सक्षम होगी। अनुसंधान दल के नेता श्री निक कैम्पबेल के अनुसार अगर उन्हें एक बार किसी आवाज़ की रिकार्डिंग मात्र दे दी जाए तो फिर वे उस आवाज़ से कुछ भी कहलवा सकते हैं। इस अनुसंधान दल ने क्योतो स्थित 'ए.टी.आर इंटरप्रेटिंग टेली कम्प्यूनिकेशंस रिसर्च लैबोरेटरी' में इस नई कम्प्यूटर प्रणाली का प्रारंभिक प्रारूप भी तैयार कर लिया है।

इस प्रणाली में सबसे पहले किसी व्यक्ति की आवाज़ की रिकार्डिंग ली जाती है फिर इस आवाज़ को अलग-अलग ध्वनियों, अक्षरों एवं वर्णों में विभाजित कर दिया जाता है। कम्प्यूटर इन ध्वनि तत्वों को नये क्रम में कुछ इस तरह से जोड़ता है कि नये वाक्य बन जाते है। परिणाम यह होता है कि जिस तरह आज हम कम्प्यूटर से 'प्रिंट आउट' निकालने के लिए टाइप 'फौंट' चुनते है ठीक इसी तरह इस प्रणाली की मदद से भविष्य में लोग 'वॉयस फौंट' का इस्तेमाल करके कम्प्यूटर से अपनी पसन्दीदा आवाज़ सुन सकेंगे।

शरीर को ही ट्रांसमीटर बनाने वाली तकनीक-पर्सनल एरिया नेटवर्क

अमेरिका के वैज्ञानिकों ने पर्सनल एरिया नेटवर्क नामक एक नई तकनीक विकसित की है जिसके परिणामस्वरूप हम अपनी सूचनाओं का आदान-प्रदान हाथ मिलाकर ही कर सकेंगे।

हमारे शरीर में जल व लवण के अंश विद्यमान है जिससे हमारा शरीर विद्युत धारा के लिए एक अच्छा सुचालक है। शरीर की इस विशेषता का प्रयोग करने के लिए वैज्ञानिकों ने प्रयत्न किये। इन्टरनैशनल बिजनेस मशीस की सैनजोस (कैलीफोर्निया) स्थित एल्माडेन अनुसंधान प्रयोगशाला में कार्यरत वैज्ञानिक टामस जियरमैन और उनके साथियों ने इस नयी वायरलेस तकनीक को जन्म दिया। इस नव विकसित तकनीक मे सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए मानव शरीर को एक माध्यम रूप में प्रयोग किया जाता है। इस तकनीक मे माचिस की डिब्बी के आकार जितने मिन्नी पोर्टेबल ट्रांसमीटर का प्रयोग किया जाता है। सम्प्रेषित करने हेतु सूचनाएँ एक सूक्ष्म चिप जमा रखी जाती है। इस ट्रांसमीटर को जेब में रखा जा सकता है।

इस तकनीक का विकास करने वाले वैज्ञानिकों के अनुसार इस तकनीक का उपयोग उसके अदृश्यो केलिए किया जा सकता है। इससे व्यापार आदि मे बिजनेस कार्ड या पास पोर्ट आदि रखने की आवश्यकताकक नही रहेगी। चिकित्सा सम्बन्धी जानकारी और कम्प्यूटर के पासवर्ड सिर्फ हाथ मिलाकर सम्प्रेषित किये जा सकेंगे।

अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिभा खोज प्रतियोगिता में नवीन नागी पुरस्कृत



अर्वान्तिका ए ग्रुप ऑफ इण्डियन कंटेपरेरी आर्टिस्ट्स नई दिल्ली के तत्वावधान में पिछले दिनों सन्त निरंकारी बालिका सी.सै. स्कूल में एक चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी में संस्था की अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिभा खोज प्रतियोगिता में पुरस्कृत बच्चों के चित्रों को प्रदर्शित किया गया।

इस प्रतियोगिता में सन्त निरंकारी बालिका सी.सै स्कूल की भी 238 छात्राओं ने भाग लिया था। प्रदर्शनी व पुरस्कार वितरण के इस अवसर पर संस्था की ओर से संस्था के उपाध्यक्ष श्री आनन्द कुमार अग्रवाल उपस्थित थे। विद्यालय की प्रबन्धक समिति के अध्यक्ष श्री सुन्दर लाल अरोड़ा ने विजेताओं को पुरस्कृत किया। कु. नवीन नागी (सुपुत्री श्री सुलेख साथी, स. सम्पादक सन्त निरंकारी (पंजाबी) को स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ।

ऐसी प्रदर्शनियाँ दिल्ली के 15 विद्यालयों में आयोजित की गयी थीं।

एयर पिस्टल में राष्ट्रीय रिकार्ड

41 वीं राष्ट्रीय निशानेबाजी प्रतियोगिता में पिछले दिनों महाराष्ट्र की हरविन्दर कौर ने महिलाओं की एयर पिस्टल स्पर्धा में नया राष्ट्रीय रिकार्ड बनाया।

हरविन्दर कौर ने एयर पिस्टल स्पर्धा में 477.8 अंक लेकर दिल्ली की शिल्पी सिंह का 475.20 अंक का एक वर्ष पुराना रिकार्ड तोड़ दिया।

दिल्ली की सोनिका मेनन ने 469.7 अंकों के साथ रजत और शिल्पी सिंह ने 468.9 अंकों के साथ कांस्य पदक जीता।

भारत ने विकसित किया सुपर कम्प्यूटर

भारत ने परम-10,000 नामक सुपर कम्प्यूटर विकसित करके उच्च कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अमेरिका तथा कई दूसरे विकसित देशों का वर्चस्व समाप्त कर दिया है। इसका विकास केन्द्र सरकार के सेंटर फार डेवलपमेंट और एडवांस्ड कम्प्यूटरिंग (सी.डैक) ने किया है। यह कम्प्यूटर 100 गिगाफ्लॉप्स वाला है।

प्रति सैकंड एक खरब गणितीय गणना करने की क्षमता वाले इस कम्प्यूटर का उपयोग मौसम विज्ञान, अंतरिक्ष विज्ञान और इंजीनियरिंग सम्बन्धी क्रियाकलापों से लेकर सैन्य कार्यों तक के लिए हो सकेगा। विकासशील देशों में यह अकेला सुपर कम्प्यूटर है। भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा इस कम्प्यूटर का विकास इस दृष्टि से और भी उपयोगी है कि यह कम्प्यूटर अमेरिका द्वारा प्रतिबंधित कम्प्यूटरों की तुलना में 50 गुणा अधिक क्षमता वाला है। विकास करने वाली संस्था के कार्यकारी निदेशक श्री वी.पी.भाटकर के अनुसार इसे इस प्रकार से डिजाइन किया गया है कि इसे टेराफ्लॉप्स (10 खरब गणना प्रति सेकंड) के स्तर पर पहुंचाया जा सके।

☐ रामकुमार 'सेवक' द्वारा

पढ़ो और हँसो

काफी देर ढूँढ़ने के बाद भी क्रिकेट खिलाड़ी को बैट न मिला तो उसने बाथरूम में कपड़े धो रही पत्नी को आवाज़ देकर कहा—मेरा वह बैट नहीं मिल रहा; जिससे मैंने बड़े-बड़े गेंदबाजों की धुलाई की थी।
— उसी बैट से तो मैं कपड़ों की धुलाई कर रही हूँ—पत्नी का जवाब मिला।

— **किशोर जसवानी** (मण्डला)

दुकान पर ग्राहक पहुँचा तो दुकानदार ने ग्राहक से पूछा— कहिए,क्या चाहिए?
ग्राहक : कुछ चाहिए नहीं, मैं तो यह कीड़े मारने वाली दवा लौटाने आया हूँ।
दुकानदार : क्यों? इसमें क्या खराबी है?
ग्राहक : इसमें कीड़े कितने पड़ गये है ये कीड़े क्या मारेगी?

\+ + +

संगीता : अरे रामप्यारी तुमने नन्हे से शैकी को इतने ऊँचे पलंग पर क्यों सुलाया है? अगर गिर गया तो?
रामप्यारी : गिर जाय तो मुझे इसके गिरने की आवाज रसोईघर तक सुनाई दे जाए। इसीलिए तो सुलाया है।

\+ + +

ग्राहक : (दुकानदार से) सेठ जी, एक किलो लाल मिर्च देना।
दुकानदार : (नौकर से) हरी, मिर्च देना।
ग्राहक : सेठ जी हरी नहीं लाल मिर्च चाहिए।
दुकानदार : लाल मिर्च ही दे रहा हूँ भाई, दरअसल हरी मेरे नौकर का नाम है।

— **रेणुका निरंकारी** (कुरखेडा)

प्रिया : मेरे चाचाजी एक हाथ से मोटर रोक देते हैं।
रेखा : तब तो वे अच्छे-खासे पहलवान होंगे।
प्रिया : नहीं, ट्रैफिक पुलिस में हैं।

— **संगीता सिंह** (मिर्जापुर)

प्रजा : (राजा से) दुहाई हो महाराज! दुहाई हो।

(राजा थोड़ा बहरा था और उसे भूलने की आदत भी थी)

राजा : (वैद्य से) दवाई दो वैद्यराज, इन्हें दवाई दो।

+ + +

एक मोटी और काली कलूटी महिला मंच पर आई। उसने कविता पढ़ना शुरू किया।

महिला : तुमने क्यों मँगवाई मेरी तस्वीर।

तभी अचानक बीच में एक श्रोता तपाक् से बोला: बच्चों को डराने के लिए।

– दर्शन भाटिया

माँ : (बेटे से) तुम कमर पर रस्सी बांधकर पढ़ाई क्यों करते हो?

बेटा : माँ मास्टर जी ने कहा है अगर प्रथम आना है तो कमर कसकर पढ़ाई करो।

+ + +

यात्री : (कुली से) मुझे ऐसे डिब्बे में बैठाना जहाँ कोई बातें करने वाला न हो।

कुली : आप चिन्ता न करें मैं आपको जानवरों के डिब्बे में बिठा दूँगा।

+ + +

एक काला व्यक्ति अपनी काली पत्नी से कहता है मैं सफेद कुर्त्ते पायजामे में कैसा लगता हूँ?

पत्नी बोली : जैसे पताशे के ऊपर मकोड़ा।

+ + +

एक बार पत्नी ने हरी साड़ी पहनी और अपने पति से बोली मैं कैसी लग रही हूँ?

पति बोला : जैसे हरे खेत में काली भैंस घुस गई हो।

– हेमलता फुलवानी (अलवर)

अप्रैल अंक रंग भरो प्रतियोगिता का परिणाम

प्रथम	:	नैना ए. चूघ 29, चर्च रोड, शान्ति नगर बंगलोर — 5600271	आयु 14 वर्ष
द्वितीय	:	सुमीत निरंकारी द्वारा/ नेत्र बल्ब पन्त गोज़ाजली बॉचली, ओल्ड आई.टी.आई. बरेली रोड, हल्द्वानी, नैनीताल—263139	आयु 13 वर्ष
तृतीय	:	देपेन्द्र सिंह जी-6, 119, रोहिणी सेक्टर 16 दिल्ली-85	आयु 14 वर्ष

इन बच्चों को हँसती दुनिया की ओर से पुरस्कार भेजा जा रहा है।

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसन्द किया गया वे है —

अरविन्दर कौर (खुरला खींगरा), सरोजनी शिवनानी (झुलेलाल कालोनी, अजमेर), महेश सेजू (कोलिहान नगर, खेतड़ी), इन्द्रवीर सिंह (किंग्जवे कैम्प, दिल्ली), नम्रता कपूर (फरीदाबाद), कपिल कुमार गोयल (बरीवाला, मुक्तसर), पूजा गर्ग (यमुना नगर), पूजा वड़ेरा (ग्वालियर), बसन्त कुमार निषाद (भीटी बाजार, अम्बेडकरनगर), नेहा मित्तल (मुकन्दपुर)

जून अंक की रंग भरो प्रतियोगिता

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है । इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भर कर 24 जून तक हँसती दुनिया कार्यालय में भेज दें । तीन सर्वश्रेष्ठ चित्रों पर पुरस्कार दिये जायेंगे।

पुरस्कारों की घोषणा हँसती दुनिया के अगस्त अंक में की जायेगी । चित्र के नीचे दिये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पूरा पता साफ-साफ अवश्य भरें। प्रतियोगिता में 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही हिस्सा ले सकते है ।

पुरस्कारों के विषय में 'सम्पादक, हँसती दुनिया' का फैसला अन्तिम और मान्य होगा ।

रंग भरो



नाम .... आयु ....

पूरा पता ....

....

....

आवश्यक सूचनाएं

हँसती दुनिया (मासिक) को आप घर बैठे ही मंगवा सकते हैं। इसका वार्षिक शुल्क मात्र 30/- रुपये है तथा आजीवन सदस्यता शुल्क 300/- रुपये हैं । यह शुल्क आप नीचे लिखे पते पर मनीआर्डर/चैक/ बैंक ड्राफ्ट/ पोस्टल आर्डर आदि द्वारा भेज सकते हैं –

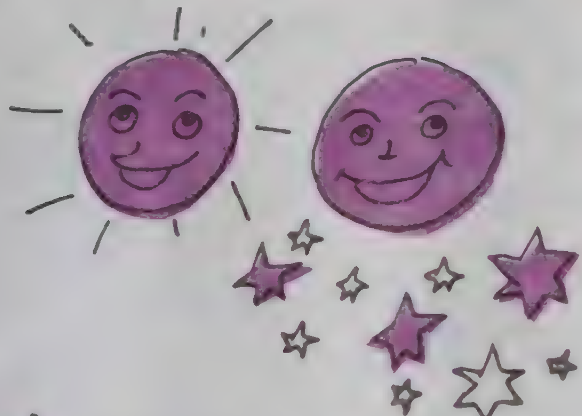
सचिव,
(प्रकाशन विभाग)
सन्त निरंकारी मण्डल
सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009

नोट : चैक/ड्राफ्ट आदि सन्त निरंकारी मणडल के नाम दिल्ली में देय होने चाहिए।

- जब भी आपका पता बदले तो पता बदलवाने के लिए पुराना व नया दोनों पूरे पते साफ-साफ व स्पष्ट अक्षरों में लिखें। चिट संख्या भी देंगे तो सुविधा होगी।
- अगर आप पहले से ही पत्रिका के सदस्य हैं तो पत्रिका का बकाया चन्दा भेजते समय भी कृपया अपना चिट नम्बर अवश्य लिखें।
- जिस लिफाफे में आपको पत्रिका मिलती है उसके ऊपर जहाँ आपका पता लिखा होता है, वहीं पर शुरू में आपका चिट नं. भी छपा होता है, उसे कृपया नोट कर लें।
- यदि आपको पत्रिका न मिलने की सूचना देनी हो तो वह चिट नं. भी साथ लिख दिया करें। इससे कार्य में सरलता हो जाती है।

कविता : कु. अंशु शुक्ला

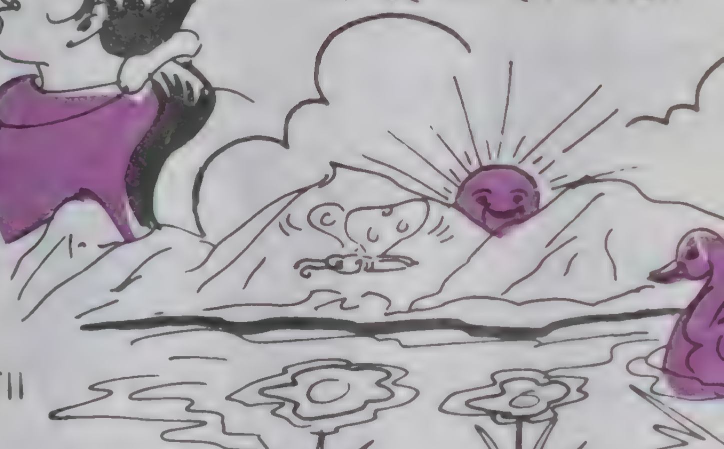
सूरज चंदा तारे



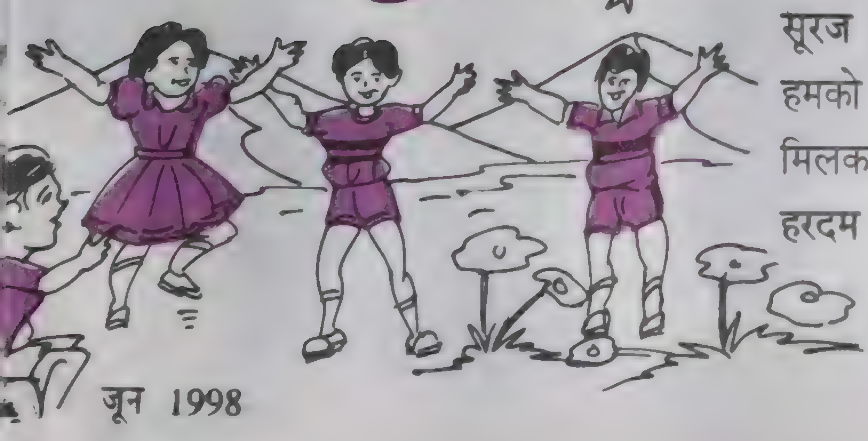
सूरज चंदा तारे,
सब हैं दोस्त हमारे।
मैं उनसे कहती हर रात,
आ जाओ तुम मेरे पास॥



सूरज हमको गर्मी देता,
चाँद है देता शीतलता,
तारे रात में चमचम करते,
मन मोह लेते हम सबका॥



सूरज आता रोज सवेरे,
पूरब में लाली फैलाता,
चाँद रात के अंधकार को,
आकर प्रतिदिन दूर भगाता॥



सूरज चंदा तारे मिलकर,
हमको ये समझाते हैं,
मिलकर रहने से ही हम सब,
हरदम पूजे जाते हैं॥

कविता : रामसागर सदन

पहलवान चूहा



रोज अखाड़ा
जाकर चूहा,
कुश्ती लड़कर आता।
दूध मलाई—
काजू-मिश्री,
एक पसेरी खाता।

रौब गाँठता
पहलवान बन,
सबको दिखलाऊँगा,
घूसा मार-
ढीठ बिल्ली को,
भुरता कर जाऊँगा।

आकर सहसा
बिल्ली हंस दी
ऐसा कर दिखलाओ,
पहलवान जी—
अपनी ताकत
किसी रोज आजमाओ।

कहानी : राम अरोड़ा

अहंकार का दान

त्रिलोकपुर का राजा सत्यभान बहुत विद्वान और शक्तिशाली था। उसकी प्रसिद्धी दूर-दूर तक फैली हुई थी। उसे स्वयं पर बहुत गर्व था। वह कहा करता था—किसी भी मामले में कोई राजा मेरा मुकाबला नहीं कर सकता। मुझे सिर्फ झुके हुए सिर ही पसन्द हैं। यह बात थी भी सच।

एक बार त्रिलोकपुर में एक महात्मा पधारे। वह ज्ञानी और तपस्वी थे। अहं की भावना उन्हें छू तक नहीं गई थी। त्रिलोकपुर में वह कुटिया बनाकर रहने लगे। दूर-दूर से दुखी और निराश व्यक्ति उनके पास आते, उनका आशीर्वाद पा, प्रसन्न होकर लौटते। लोग उन्हें मनचाहा धन देना चाहते पर वह सब कुछ लौटा देते। एक-दो समय की भिक्षा उन्हें काफी थी। राजा सत्यभान ने महात्मा के बारे में सुना। वह उनसे मिलने के लिए लालायित हो गया।

राजा ने अपने एक दूत को उन्हें बुलवाने के लिए भेजा। महात्मा जी ने कहलवाया—वक्त मिलने पर ही आ सकूँगा। अच्छा हो महाराज स्वयं यहाँ आ जाएं।



इस बात से राजा के अहं को चोट लगी। आवेश में आकर राजा बोला—उस साधु की यह हिम्मत! मेरे सामने तो बड़े-बड़े राजा नतमस्तक हो जाते हैं। महामन्त्री जी, हम उसे सबक सिखाएंगे। तुरन्त आप मेरे साथ वहाँ चलिए।

राजा की आज्ञा पाकर महामन्त्री उनके साथ चल पड़े। राजा के वहाँ पहुँचने पर विशाल जनसमूह इकट्ठा हो गया, लेकिन महात्मा जी पर उसके पहुँचने का कोई असर न हुआ। वह पहले की तरह बिल्कुल शान्त और मुस्कराते हुए बैठे थे। इससे राजा सत्यभान और क्रोधित हो गया।

वह गरजा—ओ साधु! तूने नमस्कार न करके मेरा घोर अपमान किया है।

राजन! अगर आप अपने मन से क्रोध और अहंकार के परदे को उतार दें तो मैं आपको नमस्कार कर सकता हूँ क्योंकि इन दुर्गुणों ने इस समय आपके समस्त सद्गुणों को ढक रखा है। इसलिए मुझे गुण दिखाई नहीं दे रहे हैं। नमस्कार तो सद्गुणों को किया जाता है—महात्मा जी मुस्कान बिखेरते हुए बोले।



लगता है तुम्हें मृत्यु का भय नहीं, वरना मेरे सामने इतना ज्ञान न बघारते—राजा सत्यभान क्रोध में बोला।

राजन मृत्यु का भय तो उन्हें होता है जो जिन्दगी को अपनी जागीर समझते हैं। जिन्दगी देना और लेना तो परमात्मा के हाथ में है। फिर मनुष्य मृत्यु से बेकार में क्यों डरे? हम तो सन्यासी हैं। अगर हमारी भक्ति में सच्चाई होगी तो परमात्मा भी हमारा ध्यान रखेंगे—यह कहकर महात्मा जी चुप हो गये।



आखिर राजा सत्यभान को झुकना ही पड़ा। वह सोचने लगा—मेरे हाथ में नंगी तलवार देखकर भी यह नहीं डरा। जरूर इसके हाथ में कोई शक्ति है। उसने सन्यासी से पूछा—आप में ऐसी कौन सी शक्ति है जो मुझसे डर नहीं लगा?

सन्यासी बोले—कोई शक्ति नहीं । मेरा आत्मबल मुझे बुराई के आगे झुकने पर रोकता है। वो फिर कहने लगे—आपको राजा होने पर अभिमान है । मैं भी कभी राजा था, मेरा आपसे बड़ा और शक्तिशाली राज्य था । मेरा नाम राजा महादेव था।

(बाकी पेज 54 पर)

क्या आप जानते हैं ?

— संग्रहकर्ता : विकास अरोड़ा (रेवाड़ी)

1. संसार का सबसे बड़ा मन्दिर कम्पूचिया का एन्कोरवाट मन्दिर है । इसका निर्माण राजा सूर्यवर्मन द्वितीय ने 1113-1150 में करवाया ।
2. क्षेत्रफल के हिसाब से संसार का सबसे बड़ा नगर आस्ट्रेलिया का माउन्ट ईसा है । इसका क्षेत्रफल 41.225 वर्ग किलोमीटर है ।
3. धरती सूर्य के चारों तरफ एक परिक्रमा 365 दिन 5 घंटे 48 मिनट और 45.51 सैकंड में पूरी करती है ।
4. टीपू सुल्तान के शासनकाल में मैसूर की राजधानी श्रीरंगापट्टनम थी ।
5. भारतीय राष्ट्रीय ध्वज की लम्बाई और चौड़ाई का अनुपात 3:2 होता है।
6. महाभारत में वर्णित कौरवों और पांडवों का युद्ध 18 दिन चला ।
7. ट्विंकल-ट्विंकल लिटिल स्टार...कविता की रचना जेन टेलर ने की ।
8. अब तक चार भारतीय राष्ट्रपतियों को भारत रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है । ये है—सर्वपल्ली राधाकृष्णनन (1954), राजेन्द्र प्रसाद (1962), जाकिर हुसैन (1963) और वी.वी. गिरी (1975) ।
9. अब तक पाँच भारतीय प्रधानमंत्रियों को भारत रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है । ये है—जवाहरलाल नेहरू (1955), लाल बहादुर शास्त्री (1966), इन्दिरा गांधी (1971), मोरारजी देसाई (1991) और राजीव गांधी (1991) ।
10. भारत रत्न पुरस्कार प्राप्त करने वाली प्रथम भारतीय महिला इन्दिरा गांधी (1971) थीं।

(पेज 53 का बाकी)

तब राजा सत्यभान आश्चर्य में पड़ गया और उसने उस महात्मा को प्रणाम किया। तब महात्मा बोले यदि मैं आपसे कुछ माँगू तो देंगे?

राजा ने कहा— आज्ञा दीजिए।

आप अपना अहंकार दान कर दीजिए । यह सुनकर राजा उनके चरणों में गिर पड़ा।

उसने देखा—अहंकार का दान करते ही प्रजा ने मन से राजा की जय-जयकार करना शुरू कर दिया। उस दिन के बाद राजा सदा स्वयं भी प्रसन्न रहने लगा तथा उसकी प्रजा भी उससे खुश रहने लगी। ●

आयुष

आयुष के पिता एक साधारण क्लर्क थे। आय सामान्य थी और रहन-सहन मध्यवर्गीय था। इसके अलावा इन दिनों आयुष की मां रमा को टायफाइड हो गया था और उनके इलाज में काफी खर्चा हो रहा था। इसीलिए आर्थिक दबाव को देखते हुए उसके पिता आयुष को पिकनिक पर जाने की जिद्द को पूरा नहीं कर पा रहे थे।

हर वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी स्कूल की ओर से यात्रा और पिकनिक का प्रोग्राम बना था। इस बार 'दीघा' की यात्रा और वहाँ सामूहिक पिकनिक का कार्यक्रम तय किया गया था तथा प्रति छात्र को सौ रुपये की रकम निर्धारित की गई थी। दीघा विस्तृत समुद्र तट से सूर्योदय का अद्‌भुत मनोहारी दृश्य...। प्रोग्राम की घोषणा होते ही मन रोमांच से भर उठा था और आयुष भी वहाँ जाने के लिए मचल उठा था।

उस दिन चंदा जमा करने की अन्तिम तिथि थी और आयुष अनशन कर बैठा।



तुम समझने की कोशिश करो बेटे। आयुष को समझाते हुए उसके पिता कह रहे थे। सौ रुपये की रकम हमारे लिए कम नहीं होती। तुम्हारे पापा की आय इतनी नहीं कि सैर-सपाटे पर इतनी बड़ी रकम खर्च की जा सके। हमारे आस-पास भी तो घूमने के लिए कई स्थल है। कम खर्च में भी तो पिकनिक का आनंद यहां भी तो लिया जा सकता है न...।

नहीं जाना मुझे कहीं, आयुष सिसकते हुए बोला। आप हमेशा यही बात कहकर टालते रहते हो। मेरे सभी दोस्त दीघा जा रहे हैं और उनमें से किसी के भी पापा ने इस तरह टाल-मटोल नहीं की।

पापा उसे बहुत देर तक समझाते रहे पर आयुष अपनी जिद पर अड़ा रहा। आयुष को समझाते हुए पापा का चेहरा बहुत दयनीय हो गया था। अन्त में हारकर उन्होंने आयुष को सौ रुपये दे दिए थे।

आयुष ने ज्यों ही स्कूल के दरवाजे में प्रवेश किया, सामने से रमेश मिल गया।

मिल गए रुपये? रमेश ने उसकी ओर लपकते हुए पूछा।

मिलते कैसे नहीं, आयुष के चेहरे पर विजयी मुस्कान खिल उठी था। पापा समझते है कि मैं अभी तक बच्चा ही हूँ। अब मालूम पड़ा उन्हें कि उनकी टाल-मटोल की काट भी मेरे पास है।

लेकिन आयुष तुम्हारी मम्मी की तबीयत तो... रमेश के लहजे में झिझक थी।

हाँ, मम्मी बीमार चल रही है, पर टूर और पिकनिक का प्रोग्राम भला रोज-रोज बनता है? तुम मेरे पापा को नहीं जानते। वे नहीं चाहते थे कि मैं कहीं घूमूं-फिरूँ, सैर-सपाटे को जाऊं...लेकिन इस बार...

क्लास में पहुँचने पर पता चला कि चंदा जमा करने की अन्तिम तारीख कल तक के लिए बढ़ा दी गयी है। आज स्पोटर्स के सर नहीं आए।

शाम को जब आयुष स्कूल से घर लौट रहा था तो आगामी कल के इंतजार की खुशी में उसके पाँव ही जमीन पर नहीं पड़ रहे थे। वह घूमता गुनगुनाता

अपने कमरे की ओर बढ़ रहा था कि मम्मी के कमरे के सामने से गुजरते हुए उसके पाँव ठिठक गये। अंदर से मम्मी-पापा के बीच बातचीत के स्वर हवा में तैरते हुए बाहर सुनाई पड़ रहे थे। जरूर पापा, मम्मी से उसकी शिकायत कर रहे होंगे। सुनना ही पड़ेगा।

क्या बताया है डाक्टर ने? मम्मी खाँसते हुए पूछ रहीं थीं।

निमोनिया और टायफाइड का सम्मिलित प्रकोप है। कल एक्सरे के लिए कहा है। आज के लिए कैपसूल और एक इंजेक्शन के लिए कहा है, पर मैं न ला सका। पापा का स्वर अत्यन्त धीमा व उदासियों से भरा था।



क्यों नहीं ला...?

सुबह जेब में सौ रुपये के लगभग बचे हुए थे आयुष ने टूर पर जाने की जिद्द ही ठान ली, सौ रुपये उसे देने पड़े। आफिस में कई घनिष्ट मित्रों से रुपये उधार माँगे लेकिन दुर्भाग्य सभी ने किसी न किसी बहाने मना कर दिया।

कुछ समय के लिए कमरे में सन्नाटा छा गया फिर मम्मी की खनखनाती हँसी सुनाई पड़ी। बहुत नटखट है हमारा बेटा। जिद्दी और अक्खड़ बिल्कुल आपकी तरह। लेकिन आप यूँ चेहरा क्यों लटकाए हुए हो जी?

सच रमा! कितना विवश और असहाय हो जाता हूँ मैं ऐसे क्षणों में। मेरे प्रति आयुष की क्या राय होगी ? यही ना कि पापा उसकी खुशी के लिए कुछ रुपये देने में भी हिचकिचाते हैं। अब मैं उसे किस तरह कहता कि बेटा मेरी जेब में सौ रुपये ही हैं और ये रुपये यदि मैंने तुम्हें दे दिये तो तुम्हारी मम्मी के लिए आज दवा नहीं आएगी तुम्हीं बताओ, ऐसा करते हुए मैं उसके सामने बौना नहीं हो जाता?

ओह! आप भी पता नहीं क्या-क्या सोचते रहते हो। दवा दो-चार दिन बाद भी आ सकती है। हमें अपने बेटे की इच्छाओं और खुशियों को भी तो देखना होगा। मम्मी पूर्ववत् खिलखिला रही थी और उनकी वाणी में एक रोगी की कराहों का नाम मात्र भी संकेत न था।

हाँ रमा तुम ठीक कहती हो। मैं भी नहीं चाहता कि आयुष के मन में किसी तरह की हीन भावना आये इसलिए तो मैंने ...पापा की आवाज रुंध गई थी और आगे के शब्द कंठ में ही फंसे रह गए थे।

आयुष स्तब्ध खड़ा सब सुन रहा था। उसकी आँखों के सामने सुबह की घटना घूमने लगी। उसकी लगातार जिद्द, पापा का इंकार में हिलता सिर, जिद्द और सिसकियाँ, दयनीय चेहरा। उफ! वह अपनी जिद्द और स्वार्थ की धुन में पापा को कितना गलत समझ बैठा था।

आयुष अब अपने आपको एक पल भी रोक न सका। दरवाजा धकेल कर तीर की तरह अंदर आ गया। पापा-मम्मी के सिरहाने बैठे थे। वह पापा की गोद में सिर रखकर सिसक पड़ा—पापा मुझे क्षमा कर दो। मैंने सब सुन लिया है। मैंने आपको कितना गलत समझ लिया था। मम्मी अब ऐसा कभी नहीं हो सकेगा कि मेरी जिद्द की वजह से आपको दवा से वंचित रह जाना पड़े और पापा को कर्ज के लिए किसी के सामने हाथ फैलाना पड़े। प्लीज मम्मी मुझे माफ कर दो।

बेटे! दवा की चिन्ता [illegible] करो। सैर का प्रोग्राम हमेशा... मम्मी-पापा दोनों सकपकाए से अवाक थे। भाड़ में जाये प्रोग्राम मुझे कहीं नहीं जाना। आयुष



ने जेब से रुपये निकाल कर पापा की हथेली पर रखते हुए कहा—कितना अच्छा हुआ कि आज फीस जमा नहीं हुई। पापा, मम्मी ठीक हो जायेगी तब हम सब मिल कर पास ही के किसी स्थल पर पिकनिक को चलेंगे।

मम्मी-पापा दोनों की ही पलकें भीग चली थीं और भावावेश में दोनों ने आयुष को बाहों में भर लिया था। ●

बाल कविता : बालकवि 'हंस'

धूल की अभिलाषा

चाह नहीं, मैं कूप-नदी का जल दूषित कर जाऊँ।
चाह नहीं, धुले वस्त्रों पर, अपनी सूरत बसाऊँ।
चाह नहीं, मजदूर-किसानों का, मैं साथ निभाऊँ।
चाह नहीं, जवां-खलीफों के तन पर रंग जमाऊँ।
चाह नहीं, फिल्मी तारों के रंग-रूप छू जाऊँ।
चाह नहीं, मैं वायुमंडल में प्रदूषण फैलाऊँ।



मुझे उड़ा ले चलो, पवन तुम, उन नैनों में देना डाल।
'भारत' को जो नजर लगाते, उनका तुरन्त बनूं मैं काल॥


मास्टरजी
हलवासिंहँ
चित्र:के•पी•स्टूडियो, कहानी:-शिखा जोशी
बच्चो हमें हलवा सिहं जैसा नहीं बनना है।
हलवा सिहं कैसा था मास्टरजी।
हलवा सिहं। एक साधारण व्यक्ति था एक दिन उसने सोचा-
क्यों न अपना नाम कमाऊँ।


उसने अपने घर में कीर्तन (सतसंग) कथा करने की घोषणा भी की
सभी को भोजन भी मिलेगा।
उसके यहाँ भरपूर श्रद्धालु आ पहुँचे। सभी कह रहे थे-
हलवासिहँ ने (भरपूर) सेवा की है।
वह तो केदार सेठ से भी बढ़ कर निकला।
अरे भई उसने पूरी छः चीजें परोसने की घोषणा की है। उस पर पाँच भक्तों के थैलों में सोने की एक-एक गिन्नी भी ....


जिसकी थैली में गिन्नी निकलेगी वही परम भक्त- होंगे।
पंक्ति में लोग बैठे अपनी-अपनी थैली खोल रहे- हैं। किसी थैली में चार पकवान तो किसी में तीन पकवान निकले। सोने की गिन्नी एक में भी नहीं निकली।
उस पर पंक्ति में बैठे लोगों के बीच हाथ जोड़कर निकल रहा है। उसने सोचा-युक्ति काम आ गई होगी सभी लोग उसकी जय-जय कार करेंगे।


परन्तु-वहाँ बैठे लोग उसे धोखेबाज कह रहे थे।
तुम्हारी कथनी व करनी अलग-अलग है। तुम भक्त नहीं धोखेबाज हो।
तुम कुटिल हो।
तुम्हें भगवान माफ नहीं करेगा।
सभी लोग उठकर जा रहे हैं। वह अकेला रह गया।
हे प्रभु-मैंने दूसरों को धोखा देना चाहा तूने मुझे मेरी ही करनी का फल दे दिया।
तो देखा बच्चो-हमें हलवासिहं नहीं-बनना। नहीं तो उसी की तरह पछताना पड़ेगा।
जी मास्टर जी।

आपके पत्र मिले

मैं हँसती दुनिया का नया पाठक हूँ। मुझे मार्च माह की हँसती दुनिया बहुत पसन्द आई। इसमें मुझे ईमानदार बालक, सफलता का सूत्र, पढ़ो और हँसो, दादी के उत्तर, हंस की सीख, आदि कहानियाँ और कविताएँ बहुत अच्छी लगीं।

— प्रवीन, राकेश अरोड़ा (सिरसा)

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। पत्रिका का मार्च 98 अंक बड़ा नीरस लगा। सोचा था इसमें होली पर अच्छी जानकारी मिलेगी, लेकिन आपने होली पर एक लेख तक नहीं दिया। कु. अंशु शुक्ला की दोनों कविताएँ होली और कर्त्तव्य प्रभावशाली हैं। अभिनंदन शुक्ल का लेख 'बया' भी रोचक और ज्ञानवर्धक हैं। डॉ. भैरूलाल गर्ग की कहानी 'सफलता का सूत्र' बालोपयोगी है। मेरा सुझाव है कि बालपयोगी रचनाओं को स्थान दें तथा जीव-जंतुओं और विज्ञान पर नियमित लेखों का प्रकाशन करें।

— कुमार अभिषेक (भोपाल)

हँसती दुनिया में विज्ञान और जीव-जन्तुओं से सम्बन्धित लेख एक-दो अंक के पश्चात् या कभी-कभी लगातार प्रकाशित किये जाते हैं। — सम्पादक

हँसती दुनिया के मार्च 98 के रंग-बिरंगे आवरण से ही होली ही आहट हुई। पहेली की कहानी पसंद आयी। आपकी पत्रिका में 'पढ़ो और हँसो' पढ़कर हँसी नहीं रुक पाई। निसंदेह आपके सभी लेखक अपनी रचनाओं पर अच्छी मेहनत करते हैं। एक और अच्छा व सुन्दर अंक भेजने के लिये साधुवाद।

— कमल नागपाल 'शशि' (खंडवा)

हँसती दुनिया का मार्च 98 अंक समय से पहले ही मिल गया। वैसे तो सम्पूर्ण अंक नई सामग्री व रोचकता लिए हुए था। परन्तु कहानियों में लगन का फल, हंस की सीख बहुत पसंद आई। सबसे पहले हर बार की तरह ही श्रेष्ठ था। कविताएँ सभी पसन्द आई। दादा के उत्तर, भी कई नए उत्तर समेटे हुए था। आशा है कि यह पत्रिका हमारा इसी तरह मनोरंजन करती रहेगी।

— चन्द्रशेखर मेहता 'आजाद' (रतिया)

मैं एक साल से हँसती दुनिया का पाठक हूँ। मुझे अप्रैल अंक में दुष्टता का फल, ईनाम आदि कहानियां पसन्द आई हैं। तथा 'दादा के उत्तर', 'डॉ. अंकल के उत्तर' मानसिक और शारीरिक निरोगता के परिचायक होते हैं वहीं पढ़ो और हँसो से हँसने से दिमाग तनावमुक्त होता है और समाचारों से देश विदेश की जानकारी प्राप्त होती है। यह सामान्य ज्ञान के लिए उपयोगी स्तम्भ है।

मेरे अलावा मेरे घरवाले भी इसे पस्न्द करते हैं। मेरे दादा जी इसे सबसे पहले पढ़ते हैं। इसके आने का हम सबको बेसब्री से इन्तजार रहता है। **—प्रकाश, हेमलता फुलवानी, कमल कुमार** (अलवर)


FOR
WEDDING
SAREES
SUIT
DUPATTAS
AND
LEHNGA
CHUNNIS

For the WOMAN who cooks with her mind.



ORTEM